JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"मध्यप्रदेशमेंअनुसूचितजनजातियोंकेशैक्षिकविकासमें ग्रामीणपुस्तकालयोंकीभूमिका"

शोधार्थी:कविता पुनासे

निर्देशक:डॉ. राकेश कुमार खरे

सारांश

ग्रामीणपुस्तकालयोंकामध्यप्रदेशमेंअनुसूचितजनजातियोंकेशैक्षिकविकासमेंमहत्वपूर्णयोगदानहै।अनुसूचितजनजातियाँऐतिहासिकरूपसेशैक्षिक औरसांस्कृतिकप्रतिबंधोंकासामनाकररहीहैं।इनप्रतिबंधोंकोदूरकरनेकेलिए, ग्रामीणपुस्तकालयोंनेमहत्वपूर्णभूमिकानिभाईहै।ग्रामीणपुस्तकालयोंमेंपुस्तकोंकेसंग्रहणऔरपुस्तकसामग्रीकीउपलब्धताकाविशेषमहत्वहै।येपुस्त कालयअनुसूचितजनजातियोंकोविभिन्नशैक्षिकसामग्रीकेसाथपरिचितकरातेहैं, जोउनकेशैक्षिकऔरसामाजिकविकासमेंमददकरतीहै।इनपुस्तकालयोंमेंसामूहिकअध्ययन, स्वतंत्रअध्ययनऔरसाक्षरताकार्यक्रमोंकासंचालनहोताहै।येकार्यक्रमअनुसूचितजनजातियोंकोशिक्षाकीप्राप्तिमेंसहायकहोतेहैंऔरउन्हेंसमाजकेसा थएकमजबूतऔरसमर्थभूमिकानिभानेमेंमददकरतेहैं।इसअध्ययनकेनतीजेसाबितकरतेहैंकिग्रामीणपुस्तकालयोंकाप्रभावीउपयोगकरकेअनुसूचि तजनजातियोंकोशैक्षिकसंसाधनोंतकपहुँचायाजासकताहै, जोउनकेविकासमेंमहत्वपूर्णभूमिकानिभातेहैं।इसप्रकार, ग्रामीणपुस्तकालयोंकीभूमिकाअनुसूचितजनजातियोंकेशैक्षिकऔरसामाजिकविकासमेंअत्यधिकमहत्वपूर्णहै।

कीवर्ड: मध्यप्रदेश, अनुसूचितजनजातियाँ, ग्रामीणपुस्तकालय, शैक्षिकविकास, सामूहिकअध्ययन, स्वतंत्रअध्ययन, साक्षरताकार्यक्रम, सामाजिकविकास, सामग्री, संवेदनशीलता.

I. परिचय

भारतमेंमध्यप्रदेशराज्यविभिन्नप्रकारकेसमुदायोंकाघरहै, जिनमेंकईअनुसूचितजनजाति (एसटी) याअनुसूचितजाति (एससी) शामिलहैं, जिन्हेंसामूहिकरूपसेभारतीयसंविधानमेंअनुसूचितजनजा ति (एसटी) केरूपमेंजानाजाताहै।इनसमुदायोंकोऐतिहासिकरूपसे सामाजिक, आर्थिकऔरशैक्षिकहाशिएकासामनाकरनापड़ाहै, जिसकेपरिणामस्वरूपअक्सरगुणवत्तापूर्णशिक्षाऔरसामा जिक- आर्थिकविकासकेअवसरोंतकसीमितपहुंचहोतीहै।हालके वर्षोंमें, हाशिएपररहनेवालेसमुदायोंकोसशक्तबनानेऔरउनकी सामाजिक- आर्थिकप्रगतिकोसुविधाजनकबनानेमेंशिक्षाकेमहत्वकीमा न्यताबढ़रहीहै।हालाँकि, शैक्षिकपहुंचऔरगुणवत्ताबढ़ानेकेउद्देश्यसेविभिन्नसरकारी पहलोंऔरनीतियोंकेबावजूद, महत्वपूर्णअसमानताएँबनीहुईहैं, खासकरग्रामीणक्षेत्रोंमेंजहाँबुनियादीढाँचाऔरसंसाधनअ क्सरसीमितहोतेहैं।इससंदर्भमें, ग्रामीणपुस्तकालयशैक्षिकअंतरकोपाटनेऔरहाशिएपररह नेवालेसमुदायोंकेबीचसाक्षरताकोबढ़ावादेनेमेंमहत्वपूर्णभू मिकानिभातेहैं।येपुस्तकालयशैक्षिकसंसाधनोंतकपहुँचने, साक्षरताकार्यक्रमोंकेलिएसहायताप्रदानकरनेऔरग्रामीण समुदायोंकेभीतरसीखनेकीसंस्कृतिकोबढ़ावादेनेकेलिएम हत्वपूर्णकेंद्रकेरूपमेंकार्यकरतेहैं।मध्यप्रदेशमेंअनुसूचित जनजातियोंकेशैक्षिकविकासकोसुविधाजनकबनानेमेंग्रामी णपुस्तकालयोंकीभूमिकाकोसमझनाशैक्षिकअसमानता

ओंकोदूरकरनेऔरसमावेशीविकासकोबढ़ावादेनेकेउद्देश्यसेप्रभावीहस्तक्षेपऔरनीतियोंकोडिजाइनकरनेकेलिए आवश्यकहै।यहअध्ययनमध्यप्रदेशमेंअनुसूचितजनजातियोंकेशैक्षिकसशक्तिकरणमेंग्रामीणपुस्तकालयोंकेमहत्व कापतालगानेऔरसामाजिक-आर्थिकविकासपरउनकेप्रभावकोबढ़ानेकेलिएरणनीतियों कीपहचानकरनेकाप्रयासकरताहै।

- **मध्यप्रदेशमेंअनुसूचितजनजातिऔरउनकेप्रकार**

क्षेत्र	जनजाति	जिले
उत्तर-पूर्वएमपी	कोल, मड़िया, अगरिया, पनिका, खैरवार	शहडोल, सीधी, जबलपुर, रीवा, सतना
दक्षिणीएमपी	गोडभारियाबैगा, मड़िया, हलबा	मंडला, बालाघाट, सिवनी, छिंदवाड़ा, बैतूल, होशंगाबाद
पश्चिमीएमपी	भील, भिलाला	खंडवा, खरगोन, झाबुआ, रतलाम, धार, अलीराजपुर
मध्यमप्र	गोंड, कोरकू	बैतूल, होशंगाबाद, जबलपुर, हरदा, नरसिंहपुर, रायसेन
उत्तर-पश्चिमएमपी	सहरिया, सौर	ग्वालियर, भिंड, मुरैना, शिवपुरी, टीकमगढ़, छतरपुर, सागर

- **अध्ययनकेमहत्व:**

शैक्षिकअसमानताओंकासमाधान:यहअध्ययनमध्यप्रदेशमेंअनुसूचितजनजातियोंकेबीचशैक्षिकअसमानताओंकोसमाधानकरनेकेलिए महत्वपूर्णहै।ग्रामीणपुस्तकालयोंकेशैक्षिकविकासमेंउनकीभूमिकाकी जांचकरके,
यहअध्ययनइनअसमानताओंकोकमकरनेऔरसमावेशीशिक्षाकोबढ़ावादेनेकेउपायोंपरप्रकाशडालताहै।

सामाजिक-आर्थिकविकासकोप्रोत्साहितकरना:शिक्षासामाजिक-आर्थिकविकासकामुख्यचालकहै।ग्रामीणपुस्तकालयोंकेशैक्षिकविकासमेंउनकीभूमिकाकीजांच,
समावेशीविकासकोबढ़ावादेनेकेलिएनीतियोंऔरअभियानोंकोसूचित करताहै।

शैक्षिकसंसाधनोंतकपहुँचकोबढ़ाना:ग्रामीणपुस्तकालयशैक्षिकसामग्रीऔरसंसाधनोंकेमहत्वपूर्णसंग्रहणकेंद्रहोतेहैं।इसअध्ययनसे,
संबंधितऔरगुणवत्तावालीशैक्षिकसामग्रीतकपहुँचमेंसुधारकेतरीकेऔरउपायोंकोखोजनेमेंमददमिलसकतीहै।

स्थानीयसमुदायोंकोसशक्तकरना:ग्रामीणपुस्तकालयअक्सरसमुदायकेमहत्वपूर्णकेंद्रहोतेहैं, जोकेवलकिताबेंहीनहीं, बल्किशैक्षिककार्यक्रमोंऔरगतिविधियोंकाआयोजनभीकरतेहैं।इसअध्ययनसे,
स्थानीयसमुदायोंकोउनकेशैक्षिकविकासकेलिएस्वयंकोसशक्तकरनेकेतरीकेप्राप्तहोसकतेहैं।

नीतिऔरप्रयोगमेंअद्यतन:अध्ययनकेपरिणामप्राप्तकर्ताओं, शिक्षकों,
औरप्रयोक्ताओंकोशैक्षिकपरिणामोंकोप्रोत्साहितकरनेमेंग्रामीणपुस्तकालयोंकेप्रभावकेबारेमेंसूचितकरसकतेहैं।इससेसामान्यशिक्षानीतियोंऔरअभियानोंकाविकसितहोनासंभवहोताहै।

औरअधिकअनुसंधानऔरकार्रवाईकोप्रोत्साहितकरना:ग्रामीणपुस्तकालयोंकेशैक्षिकसंवेदनशीलतामेंमहत्वपूर्णयोगदानकोप्रोत्साहितकरनेकेलिए,
यहअध्ययनऔरभीअधिकअनुसंधानऔरकार्रवाईकोप्रेरितकरताहै।

- **अध्ययनकेउद्देश्य:**

- मध्यप्रदेशमेंग्रामीणपुस्तकालयोंकेशैक्षिकविकासमेंअपनीभूमिकाकापरिचयप्रदानकरना।
- अनुसूचितजनजातियोंकेबीचशैक्षिकअसमानताओंकेकारणोंऔरप्रभावोंकीविश्लेषणकरना।
- ग्रामीणपुस्तकालयोंकेशैक्षिकसामग्रीऔरसंसाधनोंतकपहुँचकीगुणवत्ताऔरउपयोगिताकामूल्यांकनकरना।
- अनुसूचितजनजातियोंकेशिक्षामेंग्रामीणपुस्तकालयोंकेयोगदानकाप्रभावमापना।
- शैक्षिकऔरसामाजिकविकासकेक्षेत्रमेंनीतियोंऔरकार्रवाईयोंकेलिएसुझावप्रस्तुतकरना।

II. साहित्यसमीक्षा:

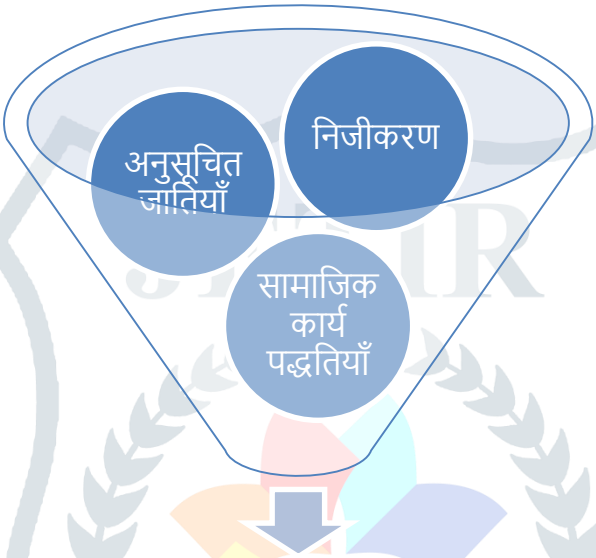

अमितचतुर्वेदी(2017) जनजातीयक्षेत्रोंमेंमुक्तएवंदूरस्थशिक्षा (ओडीएल)
केमाध्यमसेउच्चशिक्षाकाप्रसारमध्यप्रदेशराज्यमुख्यरूपसेअपनीसामाजिक-
आर्थिकस्थितिकेकारणएकचुनौतीपूर्णकार्यहैभारतसरकारकेलिएजातीयसांस्कृतिकसेटिंग।प्रस्तुतपेपरमेंएकप्रयासकियागयाहैकेलिएवितरणतंत्रमॉडलकेआधारपरप्रभावीओडीएलप्रथाओंकोविकसितकरनेकेलिएबनायागयामध्यप्रदेशकेमुख्यतःआदिवासीक्षेत्रोंमेंउच्चशिक्षाकाप्रसार।यहकियागयाहैविशेषरूपसेमध्यप्रदेशराज्यमें,
इसकीजनसंख्याकापांचवांहिस्सा (21.08 प्रतिशत) देखाजाताहैयहाँजनजातीयजनसंख्याहैजोहमारेदेशकेकिसीभीअन्यराज्यकीतुलनामेंबहुतअधिकहैभारतकेउत्तरपूर्वीराज्योंकोछोड़करजहांजनजातीयआबादीभीकाफीअधिकहै।परदूसरीओर,
उच्चशिक्षामेंआदिवासीआबादीकेओडीएलकानामांकनहिस्सालगभगहै2
प्रतिशतजोजनजातीयलोगोंकीजनसंख्याहिस्सेदारीकोदेखतेहुएकाफीकमहै।जहाँतकराज्यहैजहाँतकमध्यप्रदेशकाप्रश्नहै,
यहाँजनजातीयजनसंख्याकासंकेन्द्रणअपेक्षाकृतअधिकहैएमपीकेविभिन्नजिलोंमें 20% अलीराजपुर (89%), झाबुआ (87%), बड़वानी (69.4%), डिंडोरी(64.73%), मंडला (57.95%), धार (55.9%), अनूपपुर (47.84%), उमरिया (46.72%), शहडोल(44.70%), बैतूल (42.3%),
खरगोनजिसेपहलेपश्चिमीनिमाड़केनामसेजानाजाताथा (39%), सिवनी (37.7%), छिंदवाड़ा (36.38%), खंडवाकोपहलेपूर्वीनिमाड़ (35%), सिंगरौली (32.59%) केनामसेजानाजाताथा।भूरणपुर (30.4%), रतलाम (28.2%), हरदा (28.0%) सीधी (27.81%), कटनी (24.60%) शोपुर(23.47%), बालाघाट (22.52%) औरआगरमालवा (21.10%) जिले।इग्नूऔरमध्यप्रदेशभोजमुक्तविश्वविद्यालयभोपाल (एमपीबीओयू)
नेउच्चप्रसारकेलिएईमानदारप्रयासकियाहैअपनेनियमितअध्ययनकेंद्रऔरविशेषअध्ययनकेंद्रस्थापितकरकेओडीएलकेमाध्यमसेशिक्षा(एसएससी)
जनजातीयक्षेत्रोंमेंऔरयेकेंद्रमुख्यरूपसेस्नातककार्यक्रमोंकेलिएसक्रियहैं, बैचलरप्रिपरेटरीप्रोग्राम (बीपीपी), औरकंप्यूटरसाक्षरताकार्यक्रम

(सीएलपी)।अधिकांशजनजातियाँअपनेबच्चोंकाउपयोगकरतीहैंसहायकसेवाएँजोकुछलाएँगीउनकेगुजाराकरनेवालेपरिवारोंकेलिएअतिरिक्तआय।यहहैइसलिएनीतियोंकीजांचकरनामहत्वपूर्णहैऔरकार्यक्रमोंकापालनकियाजारहाहैऔरउनकेसाथहीराज्यमेंप्रभावीक्रियान्वयनकीपहचानकरनेकेलिएविशेषअध्ययनकरनासामाजिक-सांस्कृतिककारकतीव्रप्रगतिमेंबाधकहैंअनुसूचितोंकेबीचसाक्षरताऔरशिक्षामेंजनजातियाँसमुदायऔरउनसेसंबंधितबाधाएँशिक्षापरबुनियादीढाँचाऔरधन,
बनानासाक्षरताबढ़ानेमेंसंतोषजनकप्रगतिइनजनसंख्यासमूहोंकेबीच
।

प्रियंसिंह (2019)
प्रस्तुतअध्ययनमेंअनुसूचितजातियोंकीउच्चशिक्षाकीअप्रभावीताकेकारणोंकाविश्लेषणकियागयाहैऔरभारतमेंजनजातियाँ।भौतिकवातावरणकेअलावासामाजिकअसमानताऔरशिक्षामेंभेदभावइसप्रणालीकेकारणग्रामीणक्षेत्रोंमेंनिचलीजातिऔरउच्चजातिकेबीचसाक्षरताकाअंतरपैदाहोरहाहै।यहसमाजकेएकवर्गकोआर्थिकभेदभावऔरबुनियादीजरूरतोंकेलिएसंघर्षकासामनाकरनापड़ताहै।यहभीअछूतानहींहैलैंगिकअसमानताकाअभ्यास.
भाषाविज्ञानऔरउचितनेटवर्ककाअभावरुकावटडालनेवालाएकमहत्वपूर्णकारकहैशिक्षाप्रवाह. पाठ्यचर्याडिजाइन,
शिक्षणविधियोंऔरसंसाधनोंपरपुनर्विचारऔरअभ्यासकियाजानाचाहिएशिक्षाप्रणालीमेंअंतरकोपाटनेकेलिएइसकापूरीतरहसेपालनकियाजानाचाहिए।उच्चतरमाध्यमिकशिक्षाप्रणालीउच्चशिक्षाकीबुनियादीअवधारणाओंकोविकसितकरनेकोध्यानमेंरखतेहुएइसकापालनकियाजानाचाहिए।विकसितदेशबननेकीदौड़मेंआगेबढ़रहीभारतसरकारकोअभीभीसंघर्षकरनाहोगाग्रामीणक्षेत्रोंमेंस्कूलीशिक्षाकीबुनियादीअवधारणाओंऔरपरिघटनाकेलिएमजबूतआधारतैयारकरनाआनेवालीपीढ़ियोंकोएकविकसितऔरमजबूतराष्ट्रकेस्तंभबननेकीदौड़मेंखड़ाहोनाहै।सार्वभौमिकसंचारभाषाओंकेमहत्वकोनजरअंदाजनहींकियाजानाचाहिएऔरइसेमहत्वपूर्णमानाजानाचाहिएउच्चशिक्षापाठ्यक्रममेंअवधारणामंजूरीकीसीढ़ीजोकित्रि-
भाषाकीप्रत्येकभाषाहैसूत्रकोसमानमहत्वदियाजानाचाहिए।

मोहम्मदरज़ीक(2023) भारतएकबर्तनकीतरहहैजिसमेंअलग-अलगलोगों, संस्कृतियोंकीआबादीकेरूपमेंअलग-अलगरंग-बिरंगेफूलहैंजनजातियोंऔरअनुसूचितजनजातियोंकीआबादीउनमेंसेएकहै।भारतएकमात्रसबसेबड़ाराष्ट्रहैजिसकेपासहैसर्वाधिकजनजातीयजनसंख्या 8.6% (भारतकीजनगणना, 2011)।यहाँलगभग 705 अनुसूचितजनजातियाँहैंभारत
(जनजातीयकार्यमंत्रालयभारतसरकार, 2011)।शिक्षाहीपरिचयदेतीहैकिसीकीस्थितिसामाजिक, आर्थिकयाराजनीतिकआदिहोसकतीहै,
लेकिनशिक्षाप्राप्तकरनेकेलिएहमेशाकुछनकुछहोताहैकमियाँ, चुनौतियाँयाबाधाएँ।हालाँकिअनुसूचितजनजातिकीआबादीअपनीशिक्षामेंसुधारकररहीहैस्थितिलेकिनचुनौतियाँअभीभीबनीहुईहैं।वर्तमानपेपरकाउद्देश्यचुनौतियोंकोइंगितकरनाहै,
पिछलेशोधअध्ययनोंकीसमीक्षाकरकेअनुसूचितजनजातियोंकीशिक्षाकेरास्तेमेंआनेवालीबाधाओंयाबाधाओंकोदूरकरनाऔरविभिन्नऑनलाइनस्रोतोंसेएकत्रकीगईअन्यमाध्यमिकजानकारीऔरआँकड़े।प्रमुखभाषा, स्कूलदूरहोना,
अनुपलब्धताजैसीचुनौतियाँएकबाधाकेरूपमेंपाईगईंस्कूलमेंबुनियादीढाँचाऔरबुनियादीसुविधाएँ, निवासकेरूपमेंदूरदराजकेक्षेत्र,
कमसामाजिकऔरआर्थिकस्थिति,
सांस्कृतिकऔरपारंपरिकजीवनशैली, बच्चेकीशिक्षाकेप्रतिमाता-पिताकीमान्यताएंऔरदृष्टिकोणऔरशिक्षकसंबंधीमुद्देजैसेअनुपस्थिति, योग्यता, दूरस्थक्षेत्रसमायोजन,
औरआखिरीलेकिनप्रभावडालनेवालासबसेमहत्वपूर्णकारकजनजातियोंकामौसमीप्रवासनआदिहै,
जिसकेपरिणामस्वरूपयेचुनौतियाँउत्पन्नहुईंअनुसूचितजनजातियोंमेंनिम्नशिक्षा।यहशिक्षाहीहैजोकिसीभीसमुदाय,
समाजयाराष्ट्रकीस्पष्टछविदर्शातीहै।शिक्षाएकउपकरणयाउपकरणकीतरहहैजोकिसीकेभाग्यकारास्तादिखाताहै।दुनियाकासबसेविविधतापूर्णदेशयानीभारतमेंविभिन्नधर्मों,
विचारोंऔरसंस्कृतियोंवालेलोगहैं,
अनुसूचितजनजातियाँभीउसीकाहिस्साहैं।अनुसूचितजनजातिकीआबादीअन्यआबादीकीतुलनामेंहाशियेपरहै (मिश्राआर., 2008). उनकेद्वारापहचानेगएविभिन्नकारणोंसेभीवेशिक्षाप्राप्तकरनेमेंवंचितहैं
शोधकर्ताअभीभीउनसमस्याओंकीपहचानकरनेऔरउनकासमाधाननिकालनेमेंयोगदानदेनेकाप्रयासकररहेहैं।वर्तमानपेपरमेंविभिन्नअध्ययनोंऔरसांख्यिकीयजानकारीकोएकत्रऔरसमीक्षाकीगईहैचुनौतियोंकेबारेमेंजाननेकेलिएप्रमुखसमस्याओंकापतालगायागया।

विकासकुमारचंदेल(2023)शिक्षाएकशक्तिशालीउपकरणहैजोसमाजकोबदलसकतीहै; हालाँकि,
समाजकेकुछवर्गअभीभीपिछड़ेहुएहैंपहुंचमेंपीछे. हालाँकि,
काउंटीनेस्वतंत्रताकेसातदशकोंकाजश्नमनायाऔरकईबनायेजनजातीयसमुदायोंकेलिएयोजनाएँऔरकार्यक्रम।भारतमें 705 आदिवासीसमुदायहैं, जिनमेंसे 75 हैंसमुदायोंकोअधिकअसुरक्षितसमूहमानाजाताहैजिन्हेंपीवीटीजीकेनामसेजानाजाताहै।इनमेंबैगाजनजातिभीशामिलहैवंचितहैं.

येसमुदायमुख्यतःमध्यभारतमेंअच्छीखासीसंख्यामेंपाएजातेहैं।यद्यपि सरकारउनकेसमग्रउत्थानकेलिएप्रयासकररहीहै, फिरभीस्थितिजसकीतसबनीहुईहै।शिक्षाकेमहत्वकोसमझतेहुएसर कारनेआश्रमकेरूपमेंअनेकप्रयासकियेहैंहालाँकि, स्कूल, मॉडलस्कूल, आदिवासीस्कूलऔरएकलव्यविद्यालय, आदिवासीसाहित्यिकरिपोर्टकरतेहैं 50.6 प्रतिशतहोना. यहपेपरचयनितगैरसरकारीसंगठनोंकेप्रयासोंकापतालगानेकाएकअ नूठाप्रयासकरताहैशिक्षाविकासहेतुमध्यभारतकामैकालक्षेत्र; उनगैरसरकारीसंगठनोंमेंपरिवारशिक्षाशामिलहैसमाज, प्रणामनर्मदायुवासंघ, श्रीरामकृष्णविवेकानन्दसेवाश्रम, जनजातीयकल्याणकेंद्रआदिअध्ययनमेंउनकेप्रयासों, रणनीतियोंऔरकामकाजकेतरीकेकाविस्तृतविवरणदियागयाहैशि क्षाविकासकेलिए.

इसकेअलावायहभीजांचकीजातीहैकिसमुदायकेलिएकौनसीसामा जिककार्यपद्धतियोंकाउपयोगकियाजाताहैलामबंदी, संगठनऔरसंबंधनिर्माण।अध्ययनक्षेत्र (मैकलहिल्सरेज) भौगोलिकदृष्टिसेपृथकहै, जहांअनुपपुर, मंडलाऔरडिंडोरीआदिवासीहैंसंकेंद्रितजिले. आदिवासीसमुदायकाअपनाहैस्वदेशीसंस्कृति, रीति-रिवाजऔरअनौपचारिकशिक्षाप्रणालीजिसकेप्रभावसेधीरे-धीरेगिरावटआरहीहैआधुनिकता.

जनजातियोंकीसाक्षरतादरबहुतकमहैराष्ट्रकीसाक्षरता, जबकिमैकलजनजातियोंकीसाक्षरताबहुतअधिकहैगरीब।

साधनासक्सेना(2020)

यहपेपरपिछलेतीनदशकोंमेंशिक्षामेंआएछोटेबदलावोंपरनजरडाल ताहैमध्यप्रदेशकापिपरियानामकशहर।पिपरियाअपनेस्थानऔरसमृ द्धइतिहासकेकारणअद्वितीयहैसामाजिकआंदोलन।दशकोंकेनव-उदारवादीसुधारोंनेपिपरियाकाशहरीकरणनहींकियाहैऔरयहबनाहु आहैकिसीभीबुनियादीढांचेकेविकास, उद्योग, औरनिजीयासरकारद्वारासंचालितस्वास्थ्यसेवंचितशिक्षासुविधाएं. हालाँकि, शिक्षामेंनिजीकरणकीनीतियोंनेपिपरियाकोप्रभावितकियाहैकईमाय नोंमेंस्कूलप्रणाली, जिसमेंसर्वश्रेष्ठसरकारीस्कूलोंकीगिरावटऔरशामिलहैनिजीस्कूलखो लेगए, जिसकेपरिणामस्वरूपमध्यमवर्गराज्यसंस्थानोंसेबाहरहोगया।यहपे परशहरकेलोगोंकीबदलतीशैक्षिकऔरव्यावसायिकआकांक्षाओंकी पड़तालकरताहै।हाशिएपररहनेवालेसमुदायोंकेलिएविकल्पकुछनि चलेस्तरकेशिक्षणकेलिएप्रतिस्पर्धातकसीमितहैं, बैंकिंग, औरनौकरशाहीनौकरियाँ।इसलिएशिक्षाकानिजीकरणसामाजिकदा यराबढ़ारहाहैऔरआर्थिकविभाजनतथाबढ़तीअसमानताएँ।पिपरिया कीविशिष्टताकईकारकोंकेसंयोजनसेउत्पन्नहोतीहै, जैसेइसकीभौगोलिकस्थिति, समृद्धसमाजवादीइतिहासऔरअनेकसमुदाय।इसमेंठहरावऔरक मीकाभीअनुभवहुआहैहालकेवर्षोंमेंविकासकेअवसर।पिपरियाकीअ र्थव्यवस्थाकृषिपरनिर्भरहैभीतरीइलाकोंसेउपजऔरअनाजमंडी, कृषिव्यवसायऔरव्यापारकेइर्द-गिर्दघूमतीहै।कोईबुनियादीढांचागतयाऔद्योगिकविकासनहींहुआहै ।परिवहन, स्वास्थ्यऔरस्वच्छतासुविधाएंअल्पविकसितबनीहुईहैं।

प्रमा चटर्जी(2016)आधुनिक समाज में शिक्षा का बहुत महत्व है इसलिए अक्सर शिक्षा का महत्व होता हैउज्जवल भविष्य की कुंजी कहा जाता है। भारतीय इतिहास में हम पाते हैं कि गैर-आदिवासी समूहों नेशिक्षा कीसहायता से लाभान्वित हुए हैं, परन्तु जनजातियाँ सामाजिक दृष्टि से पिछड़ी हुई हैं।आर्थिक रूप से, सांस्कृतिक रूप से। शिक्षा जनजातीय समुदायों सहित सभी के लिए महत्वपूर्ण है।हालाँकि भारत सरकार ने विकास की दिशा में कई कदम उठाए हैंआदिवासी समुदायों का शिक्षा स्तर लेकिन उनका शिक्षा स्तर ख़राब रहता है। इस कगजजहां मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों की शैक्षिक स्थिति पर ध्यान केंद्रित किया गया हैराज्य की जनसंख्या का 21.1% हिस्सा अनुसूचित जनजाति का है (72.62 मिलियन में से 15.31मिलियन), 2011 की जनगणना के अनुसार. पेपर को द्वितीयक डेटा की मदद से पूरा किया जाता हैजो विभिन्न स्रोतों से एकत्रित किये गये हैं। यह पेपर समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास करता हैजनजातियों में शिक्षा के संबंध में। सामाजिक विकास के लिए शिक्षा एक मूलभूत आवश्यकता है। उचित के बिनाअनुसूचित जनजाति की शिक्षा, विकास कल्पना से परे है। बड़ी संख्या में हैं

भारत में जनजातीय समूहों की. प्रत्येक समूह की अपनी संस्कृति, सामाजिक प्रथा, बोलियाँ, व्यवसाय. उन्हें समाज का वंचित वर्ग माना जाता है।

अम्मान मदन(2012) भारत में सामाजिक असमानता और वास्तविक स्तर पर शिक्षा के बीच कनेक्शन, नामंजूर होने की तुलना में, प्रवेश में असमानता के पैटर्न की तुलना में इतनी अच्छी तरह समझी नहीं जाती है। दक्षिणी मध्य प्रदेश के जनजातियों के एक आदिवासी बेल्ट में 23 पड़ोसी और समान सरकारी प्राथमिक विद्यालयों का अध्ययन किया गया था ताकि छात्रों के गणित और भाषा अंकों का संदर्भीय कारकों के साथ संबंध मिल सके। इसमें छात्रों का लिंग, भौगोलिक स्थान, बाहरी एजेंसी द्वारा प्रदान की

जाने वाली विद्यालयीन सहायता और उनके माता-पिता की जाति, वर्ग, लिंग, राजनीतिक प्रभाव और शिक्षा जैसे विभिन्न संदर्भीय कारकों को शामिल किया गया। अन्य कारकों को नियंत्रित करने के बाद आंकड़ों का पार्श्वांकन विश्लेषण किया गया। अध्ययन में विद्यार्थियों के अकादमिक अंकों के लिए सबसे बड़े सहायक अकारक माता-पिता की शिक्षा और उनका राजनीतिक प्रभाव पाया गया। जाति और वर्ग महत्वपूर्ण प्रक्रियाएं थीं, लेकिन उनका योगदान अपेक्षाकृत कम था। लिंग सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण था लेकिन अंकों के साथ उसका सबसे कम संबंध था। उपलब्ध बाहरी सहायता उस प्रकार की थी जो अधिकारियों और अवंतित के बीच की अंतर को कम करने के लिए पर्याप्त थी, लेकिन इस रूप में वर्तमान स्थिति में यह इसे कभी भी मिटाने की संभावना नहीं थी। परिणाम भारतीय शिक्षा समाजशास्त्र में कुछ सिद्धांतों को पुनः विचार करने की आवश्यकता का सुझाव देते हैं। कुछ प्रणालीगत कमियाँ स्पष्ट हैं जबकि अन्य को उजागर करने के लिए थोड़ी खोजबीन की आवश्यकता है।सबसे अधिक दिखाई देने वाली हानियाँ पहुँच की प्रक्रिया में देखी जाती हैं। कुछ प्रकार की शिक्षा बहुत आगे ले जाती हैउच्च पद और धन तक अधिक आसानी से। इन्हें कई सरकारों में प्रलेखित किया गया है, एनजीओ और अकादमिक रिपोर्ट।

माल्याद्री, पाचा(2012) भारतीय संविधान ने अनुसूचित जनजातियों (एसटी) को विशेष स्थान दिया है। पारंपरिक रूप से आदिवासियों, वनवासियों, जनजातियों या आदिवासियों के रूप में संदर्भित; एसटी भारतीय जनसंख्या के लगभग 8% को गठित करते हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में रहने वाले लगभग 573 अनुसूचित जनजातियाँ हैं, जो अपनी भाषा के माध्यम से अलग होती हैं, जो उनके रहने के राज्य में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा से भिन्न होती है। भारत में 270 से अधिक ऐसी भाषाएँ हैं। 2001 की जनगणना के अनुसार, भारत में जनजातियों की जनसंख्या लगभग 67.8 मिलियन है। सबसे अधिक आदिवासी मध्य प्रदेश (16.40 मिलियन), उड़ीसा (7 मिलियन) और बिहार (6.6 मिलियन) में है। हालांकि, कुल जनसंख्या में आदिवासियों का सबसे अधिक आंकड़ा मिजोरम (95%), लक्षद्वीप (93%), नागालैंड (88%), मेघालय (86%), और अरुणाचल प्रदेश (64%) में है। नौ राज्य - मध्य प्रदेश,छत्तीसगढ़, उड़ीसा, झारखंड, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, आंध्र प्रदेश, और पश्चिम बंगाल; भारत में आदिवासी जनसंख्या का चौथाई से अधिक हिस्सा है। संविधान में कहीं भी जाति या आदिवासी की परिभाषा नहीं है हालांकि, अनुच्छेद 342 के अनुसार, एसटी उन जातियों या आदिवासी समुदायों का प्रतिनिधित्व करता है जो राष्ट्रपति द्वारा सूचित किए गए होते हैं। जनजातियाँ पारंपरिक हिन्दू जाति व्यवस्था का हिस्सा नहीं हैं। भारत में एसटी "आदिवासी" या "स्थानीय जनजाति" के अन्य भागों के तरह हैं। साम्प्रदायिक जीवन जनजाति समाज का एक मौलिक पैरामीटर बनाता है। यह विभिन्न त्योहारों और सांस्कृतिक उत्सवों के माध्यम से प्रकट होता है। अगर शिक्षक इन अवसरों में भाग लेते हैं और जनजाति संस्कृति का उचित सम्मान देते हैं, तो वह गांव में एक अच्छे शैक्षिक केंद्र का निर्माण कर सकती हैं। जनजाति गांव में, शिक्षक को एक अध्यापक के रूप में, और विशेष रूप से स्थानीय ज्ञान के 'खोजनेवाला' के रूप में, जनजाति संस्कृति से स्थानीय ज्ञान का अध्ययन करना चाहिए, जो अंत में एक वैश्विक ज्ञान में परिणामित होगा। शिक्षा में मौखिक परंपरा एक महत्वपूर्ण उपकरण होना चाहिए, जो एक जनजाति के बच्चे के व्यक्तित्व को उसके स्वयं के सांस्कृतिक परिवेश से विकसित करने में मदद करेगा, घर और स्कूल के परिवेश से अलग किए गए एक कृत्रिम धुंधले व्यक्तित्व को नहीं बनाएगा। साम्प्रदायिक जीवन जनजाति समाज का एक मौलिक मापदंड बनाता है। यह विभिन्न त्योहारों और सांस्कृतिक उत्सवों के माध्यम से प्रकट होता है। अगर शिक्षक इन अवसरों में भाग लेते हैं और जनजाति संस्कृति का उचित सम्मान देते हैं, तो वह गांव में एक अच्छे शैक्षिक केंद्र का निर्माण कर सकती हैं। जनजाति गांव में, शिक्षक को एक शिक्षार्थी होना चाहिए, और विशेष रूप से जनजाति संस्कृति से स्थानीय ज्ञान का 'खोजक' होना चाहिए, जो अंत में एक वैश्विक ज्ञान में परिणामित होगा। शिक्षा में मौखिक परंपरा एक महत्वपूर्ण उपकरण होना चाहिए, जो जनजाति के बच्चे के व्यक्तित्व को उसके स्वयं के सांस्कृतिक परिवेश से विकसित करने में मदद करेगा, घर और स्कूल के परिवेश से अलग किए गए एक कृत्रिम धुंधले व्यक्तित्व को नहीं बनाएगा।

III. शोधकीकमी:

प्रदानकिएगएपाठोंकेआधारपर,
एकसंभावितअनुसंधानकीकमीकासंकेतहोसकताहैभारतमेंअनुसूचितजातियोंऔरजनजातियोंकेबीचशिक्षामेंहोनेवालीशिक्षाकीअसमानताओंकोसंबोधितकरनेकेलिएसरकारीनीतियोंऔरकार्यक्रमोंकीप्रभावकारिताकाएकव्यापकविश्लेषणकीआवश्यकताहै।हालांकि,
पाठोंमेंविभिन्नचुनौतियोंऔरपहलोंकास्पर्शहै,
लेकिनकिसीविशेषहस्तक्षेपोंकाविस्तृतविश्लेषण,

उनकेआधारशीलस्तरपरकार्यान्वयन,
औरमार्जितसमुदायोंकेलिएगुणवत्ताशिक्षाकेपहुंचकोसुधारनेपरउन काप्रभावपरगहराजाँचकाअभावहोसकताहै।इसकेअतिरिक्त, भूगोल, आर्थिकस्थिति, सांस्कृतिकबाधाएँ, औरलिंगजैसेकारकोंकेसंगतिकताकाअध्ययनभीसीमितहोसकताहै, जोइनसमुदायोंकेशिक्षामेंहोनेवालीअसमानताओंकेसंदर्भमें।इनपह लुओंकीजाँचसेनीतिनिर्माताओंऔरप्रबंधनकर्ताओंकेलिएमहत्वपूर्ण अनुमानप्राप्तहोसकतेहैं,
जिन्हेंसमावेशीशिक्षाकेलिएअधिकनिश्चितऔरप्रभावीरणनीतियोंका डिज़ाइनकरनेकेलिएअच्छेदिशानिर्देशप्राप्तहोसकतेहैं।

IV.अनुसंधानपद्धति:

सांख्यिकीयविश्लेषण:प्राथमिकडेटासंग्रहकेलिए,
ग्रामीणक्षेत्रोंमेंस्थितअनुसूचितजनजातिकेसाक्षात्कार,
साक्षरतास्तरकाजांच,
औरपुस्तकालयोंकीसामग्रीकाविश्लेषणकियाजाएगा।

संगठितसाक्षात्कार:ग्रामीणपुस्तकालयोंकेप्रबंधकों,
सामुदायिकनेताओं,
औरअन्यस्थानीयप्रतिष्ठानोंकेसाथसंगठितसाक्षात्कारकिएजाएंगेता किउनकीदृष्टिकोणसेग्रामीणपुस्तकालयोंकेशैक्षिकयोगदानकामूल्यां कनकियाजासके।

प्रायोगिकअध्ययन:

चयनितकुछगाँवोंमेंप्रायोगिकअध्ययनकियाजाएगा,
जिसमेंग्रामीणपुस्तकालयोंकीप्रभावीता, सामाजिकसहयोग, औरशैक्षिकपरिणामोंकामूल्यांकनकियाजाएगा।

तुलनात्मकअध्ययन:अन्यराज्योंऔरक्षेत्रोंमेंग्रामीणपुस्तकालयोंकेशै क्षिकयोगदानकेसाथमध्यप्रदेशकातुलनात्मकअध्ययनकियाजाएगा।

प्रस्तावनाऔरविश्लेषण:अध्ययनकेआधारपरग्रामीणपुस्तकालयों केशैक्षिकयोगदानकेप्रस्तावितसुधारोंकाविश्लेषणकियाजाएगा, जोअनुसूचितजनजातियोंकेशैक्षिकऔरसामाजिकविकासमेंसहायक साबितहोसकतेहैं।

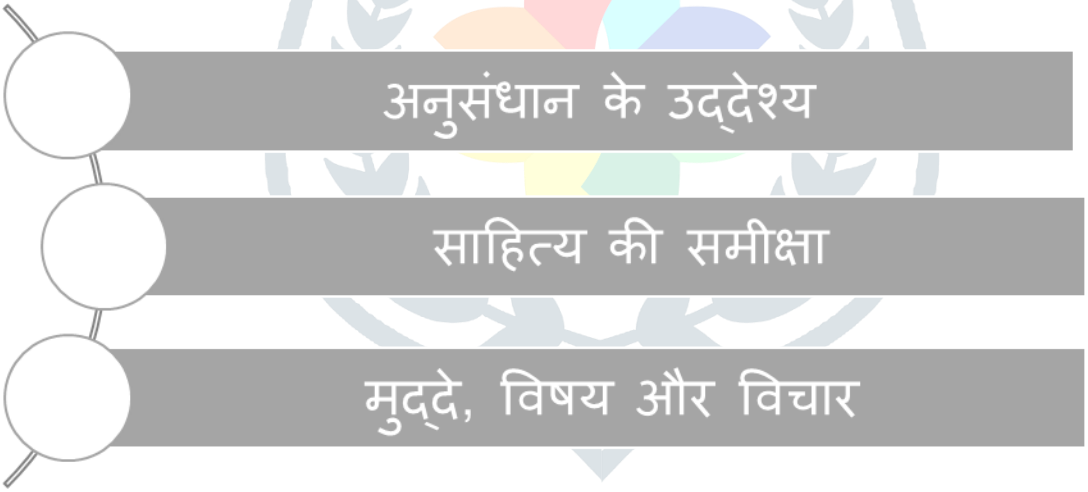

चित्र 1. डेटा संग्रह पथ

V. भविष्यकाक्षेत्र

अध्ययनकेभविष्यकेक्षेत्रमें,
एकमहत्वपूर्णपहलहैग्रामीणपुस्तकालयोंकेशैक्षिकयोगदानकोऔर भीप्रभावशालीऔरसक्रियबनानेकेलिएउपायोंकापरिकल्पनाकरना ।इसमेंशामिलहैंग्रामीणक्षेत्रोंमेंअनुसूचितजनजातियोंकेशैक्षिकसंगठ नकोसुदृढ़करनेकेलिएपुस्तकालयोंकीभूमिकामेंसंभावितपरिवर्तनों कामूल्यांकन,
सामाजिकसंगठनोंऔरस्थानीयप्रशासनकेसाथसहयोगकरनेकेलिए निर्देशकसूचनाकाविकास,
औरग्रामीणक्षेत्रोंमेंशैक्षिकपरिणामोंकोसुधारनेकेलिएशैक्षिकनीतियों कासंशोधन।यहअध्ययनभविष्यमेंसंवेदनशीलऔरस्थायीशैक्षिकने तृत्वकेविकासकोप्रोत्साहितकरनेकेलिएमहत्वपूर्णहोसकताहैऔर अनुसूचितजनजातियोंकोउचितशिक्षासंसाधनोंतकपहुँचनेमेंसहाय कहोसकताहै।

VI. निष्कर्ष

अध्ययनकापरिणामदर्शाताहैकिग्रामीणपुस्तकालयोंकामध्यप्रदेशमें अनुसूचितजनजातियोंकेशैक्षिकविकासमेंमहत्वपूर्णयोगदानहै।इन पुस्तकालयोंकीसहायतासेअनुसूचितजनजातियोंकोउचितशिक्षासा मग्री,

साक्षरताकार्यक्रमोंऔरसामाजिकसंगठनकीसेवाएंप्राप्तहोतीहैं।इस अध्ययनकेआधारपर,

हमसुझावप्रस्तुतकरतेहैंकिसरकारीनीतियोंमेंग्रामीणपुस्तकालयों कोमहत्वपूर्णस्थानदियाजानाचाहिए,

उनकेविकासकेलिएसमर्थनप्रदानकियाजानाचाहिए,

औरउनकीसंगठनाऔरप्रबंधनमेंउन्नतिकीजानीचाहिए।इसकेअला वा, सामुदायिकसहयोग, सामाजिकसंगठनोंकेसाथसाझेदारी, औरसरकारीसहायताकेमाध्यमसेइनपुस्तकालयोंकेशैक्षिकयोगदा नकोऔरभीप्रभावशालीबनायाजासकताहै।आखिरकार, इसअध्ययनसेहमेंयहज्ञातहोताहैकिग्रामीणपुस्तकालयोंकोशैक्षिक संगठनकेरूपमेंमहत्वपूर्णभूमिकामिलसकतीहै, जोअनुसूचितजनजातियोंकेशैक्षिकऔरसामाजिकविकासकोसमर्थ नकरनेमेंसहायकहोसकतीहै।

VII. संदर्भ :

1. राजीक, एम. (२०२३). भारत में अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा में चुनौतियाँ और बाधाएँ: एक अवलोकन। दिसंबर, ०–८।
2. जिले, टी. (२०१७). ओडीएल के माध्यम से उच्च शिक्षा के प्रसार का मूल्यांकन। १२(२), ३७–४८।
3. सिंह, प., और कुमार, एल. (२०२०). समीक्षा: मध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ में संघटित जाति और जनजातियों के उच्च माध्यमिक शिक्षा के प्रभाव पर उच्चतर शिक्षा का प्रभाव। ६।
4. चंदेल, वी. के., रथौर, एन. एस., और रमेश, बी. (२०२३). जनजाति शिक्षा के लिए नागरिक समाज संगठनों के प्रयास: मध्य भारत के मैकल क्षेत्र से प्रतिबिम्ब। अगस्त।
5. शिवराम, बी., कुमार, आर., कुमार, एस., नेगी, बी. एस., दलाल, आर. एस., राज, वाई., गुप्ता, आर., सचदेवा, ए., ठाकुर, प., सिंह, प., सोनी, म., कौंडल, एच., और अदेवाले, ओ. (२०२३). हिमाचल प्रदेश।
6. सोनी, वी. के. (२०२१). मध्य प्रदेश की अनुसूचित जनजाति महिलाओं की जनसांख्यिकीय, सामाजिक-आर्थिक, मातृत्व और बाल स्वास्थ्य। फरवरी।
7. घोष, एस. (२०१५). भारतीय राज्यों में विद्यालय शिक्षा में असमानताओं का मापन: भारतीय स्थानीय जनजाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों के बीच नामांकन की अंतर्गत अंतर की कमी? २०(३), ५४–७१। https://doi.org/१०.९७९०/०८३७-२०३४५४७१
8. इस्लाम, एम. एस. (२०२०). निस्सिम एजीकियल की आधुनिक स्थिति और 'रोमांटिक भूतकाल' से 'एक शुद्ध ब्रेक।' अगस्त।
9. चंटिया, ए., और मिश्रा, प. (२०१५). भारत में अनुसूचित जनजातियों के अधिकार: चुनौतियाँ और समस्याएं जनजाति लोग: भारतीय संदर्भ में जनजाति का जनसांख्यिकीय प्रोफाइल। १, ४०–५०।
10. सक्सेना, एस. (संग्रहीत). कोई शीर्षक नहीं।
11. चंदेल, वी. के., रथौर, एस. एस., और रमेश, बी. (२०२३). उच्च शिक्षा में अनुसूचित जनजातियाँ: समस्याएँ और दृष्टिकोण। ५(४), १–८।
12. मदन, ए., और तिवारी, जी. (२००८). सामाजिक असमानता की दृष्टि से शैक्षिक उपलब्धि: एक अध्ययन एक जनजाति के क्षेत्र में अम्मन मदन और घनश्याम तिवारी। मनवा, १–१९।
13. शर्मा, आर. के., और रॉय, जे. (२०१७). तीन सबसे पिछड़े जनजातियों की सामाजिक-आर्थिक और जनसांख्यिकीय विशेषताएँ मध्य प्रदेश। जनवरी २०१६।
14. सिंह, ए. के. (२०२३). उत्तर प्रदेश में जनजातियों के शैक्षिक विकास। १२(१), २०२३।
15. चटर्जी, प. (२०१९). मध्य प्रदेश में जनजाति समुदायों की शिक्षा की स्थिति। जनवरी।
16. ब्रिजेस, के. (२०१६). जलवायु परिवर्तन, अनुसूचित जातियों, और अनुसूचित जनजातियों: ग्रामीण मध्य प्रदेश में महिला किसानों की सामाजिक-आर्थिक और जलवायु परिवर्तन की भावनात्मकताएं विशेष रूप से महिला किसानों की सामाजिक-आर्थिक और जलवायु परिवर्तन की भावनात्मकताएं विशेष रूप से महिला किसानों की सामाजिक-आर्थिक और जलवायु परिवर्तन की भावनात्मकताएं विशेष रूप से महिला किसानों की सामाजिक-आर्थिक और जलवायु परिवर्तन की भावनात्मकताएं। ५।
17. सोनी, ए. (२०२४). छत्तीसगढ़ के अगारिया जनजाति के माध्यम से औपचारिक शिक्षा के माध्यम से जनजाति विकास। दिसंबर २०२३। https://doi.org/१०.२१०८८/आईजेआरए.२४५४.९११८.९२२३.४

18. प्रदेश, ए. (२०१२). जनजाति बच्चों के लिए शिक्षा: मानव विकास के लिए एक इंजन। १(१), ९९–१०६।